मधुरेश ने फॉस्ट के अनुभूत सत्य को भारत की वर्तमान परिस्थितियों से जोड़कर ठीक लिखा है– भारत में वामपंथी संस्थाओं का संकट बढ़ा है। फॉस्ट का यह उपन्यास भारतीय वामपंथ को नई दिशा दिखला सकता है। यही कारण है कि हावर्ड फॉस्ट का शपथ वर्तमान चलते दौर में एक चेतावनी की तरह है जिसका आशय यह है कि यदि वामपंथी शक्तियां वर्तमान फासीवाद का प्रखर प्रतिरोध नहीं करती हैं तो भारत का संविधान खतरे में पड़ जाएगा।

समीक्ष्य आलोचना पुस्तक में मधुरेश ने विवेकपूर्ण समीक्षा से उपन्यास और समय के रिश्तों की पड़ताल की है। इस पुस्तक में कुल सोलह आलेख संकलित है, जिनका संबंध हिन्दी के अनेक चर्चित-अचर्चित उपन्यासकारों से है। बाहरी प्रेरणा के फलस्वरूप रचे गए इन आलेखों में राहुल सांकृत्यायन, मोहन राकेश, भीष्म साहनी, मन्नू भंडारी, राजेन्द्र यादव, चित्रा मुद्गल, विश्वम्भरनाथ उपाध्याय, कृष्णा अग्निहोत्री, सुदर्शन नारंग, रंगनाथ तिवारी, शरद पगारे, बदीउज्जमाँ, इस्मत चुगताई, हृदयेश, अखिलेश के अलावा एक अमरीकी उपन्यासकार हावर्ड फॉस्ट का एक उपन्यास 'शपथ' की औचित्यपूर्ण समीक्षा है।

मधुरेश की आत्मीय समीक्षा उसी सुधी पाठक को सम्बोधित होती है, जो समीक्ष्य कृति से अक्सर परिचित नहीं होता है। त्रिलोचन कहा करते थे कि समीक्षा ऐसी होनी चाहिए जिसे पढ़कर पाठक समीक्ष्य कृति पढ़ने को उत्कंठित हो जाए। मधुरेश के समीक्षा-कर्म में यह वैशिष्ट्य लक्षित होता है। यही कारण है कि वह पहले समीक्ष्य उपन्यास अवधानपूर्वक आदि से अंत तक धैर्यपूर्वक पढ़ते हैं रचना की पाठ-प्रक्रिया की अवधि में वह उसमें विन्यस्त प्रमुख घटना-प्रसंगों एवं उनसे सम्बद्ध प्रमुख पात्रों के चारित्रिक विशेषताएँ नोट करते हुए सम्पूर्ण कृति का ऐसा पाठ-विश्लेषण प्रस्तुत करते हैं, जिसे पढ़कर और समझकर पाठक रचनाकार के रचनात्मक संदेश के औचित्य-अनौचित्य से सुपरिचित हो जाता है। समीक्ष्य रचना का विश्लेषण करने के बाद मधुरेश प्रगतिशीलता के आधार पर उसका मूल्य और आँकते हैं। गैर प्रगतिशील रचना में भी कोई ऐसी भी रेखांकित करती है जो जीवन के सत्य का उद्घाटन करती है। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि मधुरेश का आलोचना-संसार ऐसा प्रीतकर लोकतांत्रिक समाज परिलक्षित होता है, जिसमें हिन्दी लेखकों के साथ-साथ अन्य भारतीय भाषाओं के प्रमुख लेखकों की कृतियों का समादर दिखाई पड़ता है। मधुरेश वैश्विक कथा साहित्य के गंभीर अध्येता है। अतएव उन्होंने विदेशी लेखकों की महान कृतियों का उल्लेख अपनी समीक्षा में अनेक बार किया है। इस संदर्भ में इस पुस्तक का अंतिम आलेख 'काले दौर में एक चेतावनी की तरह' पठनीय है, जो विश्वविख्यात अमरीकी उपन्यास हावर्ड फॉस्ट के उपन्यास 'प्लेज' अर्थात् 'शपथ' से संबंधित है। प्रसंगवश उल्लेखनीय, अमृतराय द्वारा अनूदित हावर्ड फॉस्ट के तीन उपन्यासों आदि विद्रोही, समरगाथा और शहीदनामा की प्रशंसा मधुरेश ने मुक्त कण्ठ से की है। इसका कारण है कि हावर्ड फॉस्ट ने इतिहास बोध का रचनात्मक प्रयोग जन-संघर्ष के रूप में किया है, जो देश-काल की सीमाएँ लाँघकर वैश्विक रूप में प्रत्यक्ष होता है। उपरोक्त समीक्ष्य उपन्यास का नायक एक अमरीकी पत्रकार है। नाम हैं बूस बेकन जो न्यूयार्क ट्रिब्यून में काम करता है। संयोग ऐसा उपस्थित होता है कि उसे दूसरे विश्वयुद्ध के दौर में भारत आना पड़ता है यहाँ आकर वह सन् 1943 में पड़े बंगाल के अकाल के बारे में सूचनाएँ एकत्र करता है।

वह अनेक प्रतिकूलताओं का सामना भी करता है। फिर भी वह सत्य-संधान में संलग्न रहता है। उसके चरित्रांकन के माध्यम से हावर्ड फॉस्ट ने फासीवाद का क्रूरतम रूप उजागर किया है। मधुरेश ने फॉस्ट के अनुभूत सत्य को भारत की वर्तमान परिस्थितियों से जोड़कर ठीक लिखा है- भारत में वामपंथी संस्थाओं का संकट बढ़ा है। फॉस्ट का यह उपन्यास भारतीय वामपंथ को नई दिशा दिखला सकता है। यही कारण है कि हावर्ड फॉस्ट का शपथ वर्तमान चलते दौर में एक चेतावनी की तरह है जिसका आशय यह है कि यदि वामपंथी शक्तियां वर्तमान फासीवाद का प्रखर प्रतिरोध नहीं करती हैं तो भारत का संविधान खतरे में पड़ जाएगा।

उपन्यास ऐसी गद्य विधा है, जिसमें देशकाल का वर्तमान एवं अतीत दोनों आवाजाही कर सकते हैं। अतीत के गर्भ में उनके ऐसी प्रेरक घटनाएं एवं प्रेरक प्रसंग तथा चरित्र छिपे रहते हैं, जिनके सम्यक ज्ञान से हम अपना वर्तमान और भविष्य संवार करते हैं। अतएव जागरुक लेखक और कवि अतीत का रचनात्मक प्रयोग करके अपने वर्तमान का मार्गदर्शन करते हैं। यही कारण है कि उन्यासकारों ने इतिहास का सर्जनात्मक प्रयोग निरन्तर किया है। मधुरेश के ऐतिहासिक उपन्यास विशेष रूप से आकृष्ट करते हैं। ऐतिहासिक उपन्यासों पर उनकी एक पुस्तक शीघ्र प्रकाश्य है, जिसमें हिन्दी और हिन्दीतर उपन्यासकारों की कृतियों की आत्मीय आलोचना है। ऐतिहासिक उपन्यास की सैद्धांतिकी समझने-समझाने के लिए उनका एक आलेख 'लूकॉच और ऐतिहासिक उपन्यास' पर है। जिसमें लूकॉच की प्रमुख स्थापनाएं समझाने के बाद लेखक ने उनकी सीमा का भी उल्लेख किया है कि लूकॉच के